RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 3 & 4, Vol. : 5,
July-December (2018), Joint Edition, Pages : 42 - 44
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

गांधी वादी चिंतन में पर्यावरण संरक्षण

मुनेश कुमार पाठक

असि0 प्रो0, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, गणाई गंगोली (पिथौरागढ़)

Received : 08/11/2018 *1st BPR* : 12/11/2018 *2nd BPR* : 28/11/2018 *Accepted* : 10/12/2018

ABSTRACT

हमारा उद्देश्य जीने लायक जगह तथा जीने योग्य जीवन हमारे जीवन शैली के बदलाव के माध्यम से प्राप्त किए जा सकते हैं। हमारी असीमित जरूरत और असीमित लालच को नियंत्रित किया जाना चाहिए। आर्थिक हमारे दृष्टिकोण–विकास और आर्थिक उन्नति पर मानव मूल्यों के साथ सामंजस्यपूर्ण होना चाहिए। गांधी जी का समूचा जीवन और कार्य पर्यावरणीय संरक्षण का उदाहरण है। ऐसा इसीलिए नहीं है कि उन्होंने पर्यावरण पर अपने विचारों को कलमबंद किया, बांध का कार्य रोकने के लिए आंदोलन का नेतृत्व किया या नदी की सफाई की बल्कि सही मायने में वे सतत् विकास के प्रणेता थे। संक्षेप में, हम कह सकते है कि उनका पूरा जीवन एक संदेश था। उनका जीवन भारतीयों के विकास का मार्गदर्शक था और शेष दुनिया के लिए अनुयायी पथ।

की–वर्ड : पर्यावरण, संरक्षण व गांधी चिंतन ।

समकालीन परिदृश्य में पर्यावरण असंतुलित आज एक विश्वव्यापी समस्या का रूप ले चुका है। विकसित और विकासशील देश सभी इस समस्या के समाधान के लिए समान रूप से प्रयासरत है। यह मनुष्य के समक्ष किन्हीं बाह्य कारकों द्वारा उपस्थित की गई समस्या नहीं है, बल्कि स्वयं मानव की जीवन शैली प्रकृति के सम्बन्ध में उसकी नीति और विकास की ऊपरी संकल्पना और इस निमित्त अपनाई गई रणनीति का ही परिणाम है। पर्यावरण असंतुलन का कारण मनुष्य द्वारा अपनाई गई गलत नीतियों के ही मूल में है। मानव अपने लालच के लिए प्रकृति का अमर्यादित दोहन करने, प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित उपभोग कर पर्यावरण असंतुलन और प्रदुषण से समबंधित समस्याओं का दायरा निरन्तर बढ़ता जा रहा है। प्राकृतिक आपदायें नए–नए रूप में सामने आ रही हैं। कोई भी तकनीक हस्तक्षेप चाहे कितनी भी बेहतर और प्रभावी हो, चाहे कोई भी सामाजिक–आर्थिक सुधार कितना ही प्रभावकारी व गहरा हो तथा हमें अशांत तबाही से बचाने के लिए सक्षम हो, बचा नहीं सकता अगर प्राकृतिक संसाधन अपने संयम की क्षमता के नीचे चली गई तथा पर्यावरण ठीक करने योग्य नहीं रह गई। गांधी जी ने भी पर्यावरण के प्रति अपनी चिंता को व्यक्त करते हुए यह आग्रह किया था कि शहरी औद्योगिक सभ्यता का विकल्प 'ग्राम्यकरण' है जहां का समाज मानव और प्रकृति के सामंजस्य पर आधारित होता है।

गांधी जी के विचार और चिंतन केवल भारत के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रासंगिक हैं क्योंकि इनका लक्ष्य मनुष्य एवं प्रकृति में सामंजस्य बिठाना है। यद्यपि गांधी जी के जीवन काल के दौरान पर्यावरण और विकास को लेकन व्यापक बहस की गुंजाइश नहीं थी तथापि उनके विचार समय से बहुत आगे थे। जिस पर्यावरण की चिंता हम आज कर रहें हैं; उनके प्रति वे बहुत पहले से ही चिंतित थे। एस0 राधाकृष्णन के शब्दों में, 'गांधी ने दक्षिण अफ्रीका या भारत में जो आश्रम या समुदाय का प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य स्थापित करके रह सकता था। गांधी जी द्वारा संस्थापित सामुदायिक जीवन श्रमिक जीवन, वृक्षारोपण, कृषि, साधारण जीवन और शिल्प का समायोग था।'' गांधी जी की इस अवधारणा के बारे में नोबेल पुरस्कार विजेता भौतिकवेत्ता फ्रित्जॉफ केपरा ने भी लिखा है कि, ''गांधी जी प्रकृति के साथ प्रेम के बारे में केवल बोलते ही नहीं थे बल्कि आश्रमों के माध्यम इसे सजीवता से अनुभव भी करते थे। गांधी जी का दर्शन था–आवश्यकता हो तो भी लालच मत करो, आराम हो तो थोड़ा हो और वह विलासिता न बन जाए।

मानव और प्रकृति के बीच सम्बंधों को लेकर गांधी जी के विचार 'वसुदेव कुटुम्बकम' की वैदिक अवधारणा से प्रेरित है जिसमें पृथ्वी को जीवों का बहुत बड़ा परिवार माना गया है। औद्योगिक विकास के कारण पृथ्वी के जीवन पर सिर्फ दबाव ही नहीं पड़ता रहा है, यह खतरे में भी पड़ गया है। सौर प्रणाली में तमाम भौतिक और रासायनिक परिवर्तन हो रहे हैं, जो गम्भीर चिंता का विषय बने हुए हैं। जीवनोपयोगी प्रणालियों में परिवर्तन से अंततः मानव जीवन की गुणवत्ता सहित विभिन्न जीवों की जीवन क्षमता प्रभावित होती है।

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 42-44, ISSN 2348 – 3318

मुनेश कुमार पाठक

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

गांधी जी शब्द और कार्रवाई के व्यक्ति थे, जो हमेशा उदाहरण के आधार पर नेतृत्व पर विश्वास करते थे। वे सिर्फ एक महान राजनीतिक और आध्यात्मिक नेता नहीं थे; वह एक विचारक भी थे और पहली बार उन्होंने टिकाऊ विकास की तर्ज पर सोचा था। उनकी शिक्षाओं और लेखों ने टिकाऊ विकास की दिशा में उनकी विचार प्रक्रिया को प्रकट किया है। गांधी जी पर्यावरणवादी थे। गांधी जी आत्मनिर्भर आवासीय समुदाय में विनम्रता से रहते थे, परम्परागत भारतीय पोशाक पहनते थे, जो हाथ से घूमते एक परखा पर बनाए गए धागे से बनाये जाते थे। उन्होंने सरल शाकाहारी भोजन खाया और आत्मशुद्धि तथा सामाजिक विरोध दोनों के लिए लम्बे समय तक उपवास किया। गांधी जी ने न केवल पश्चिमी समाज को चेतावनी दी थी कि उनकी जीवनशैली बुरे परिणाम ला सकती है बल्कि उनके देशवासियों से अपील की कि भौतिक लाभ के विचार में फंस न जाए। गांधी जी का एक प्यावरणवादी के रूप में वास्तविक महत्व नहीं है बल्कि उनके दृष्टिकोण और मानव प्रकृति के सम्बंधों की उनकी समझ में है बल्कि इस तथ्य पर है कि उन्होंने इन आदर्शों पर अपना निजी जीवन बिताया और दूसरों के पालन के लिए जीवित उदाहरण तैयार किया। अपने सम्पूर्ण जीवन के दौरान उन्होंने स्वास्थ्य, आरोग्य शास्त्र और स्वच्छता पर प्रदर्शन जारी रखा।

गांधी जी के जैविक खेती के महत्व और रासायनिक उर्वरकों के उपयोग के खतरों के बारे में कुछ अन्य विचार उस समय अजीब और अव्यवहारिक लगे थे। जब उन्होंने लागू किया था। उन्होंने कहा जब तक हम जीवन चक्र के साथ सहयोग करते हैं तब तक धरती अपनी उर्वरता को अनिश्चित काल के लिए नवीनीकृत करती है और जो उस पर निर्भर करते हैं, उन्हें स्वास्थ्य, जीवन और शांति प्रदान करती है, लेकिन जब नकारात्मक रवैया चल रहा होता है, प्रकृति का संतुलन परेशान होता है और सभी प्रकार की जैविक गिरावट होती है जो पर्यावरण को प्रभावित करती है। प्रकृति में संतुलन बहुत ही नाजुक चीज है और पारिस्थितिकी तंत्र में थोड़ी सी भी गडबड़ी प्राकृतिक संतुलन को तबाह करने के लिए पर्याप्त है। संभवतः उनके विचार वेदांत पर आधारित थे जो धार्मिक मान्यताओं और वैज्ञानिक चिंतन का मिश्रण है।

दुनियाभर के पर्यावरणविद आज गांधी जी के इस विचार से सहमत हैं कि मौजूदा स्वरूप में औद्योगिक समाज लम्बे समय तक क्रियाशील रहने वाला नहीं है। गांधी जी उद्योगीकरण के खिलाफ नहीं थे, वह केवल उद्योग और अमानवीय मशीनी संस्कृति के खिलाफ थे। उन्होंने जोर देते हुए कहा था कि ''मशीनरी केवल मुट्ठीभर लोगों को लाखों लोगों पर शिकंजा कसने में मदद् करती है।'' उन्होंने उत्पादन के लिए जनता द्वारा लघु उपक्रम लगाए जाने की आवश्यकता पर बल दिया था न कि किसी व्यक्ति द्वारा बड़े पैमाने पर उत्पादन करने पर गांधी जी की साधारण और किफायती जीवन शैली पारिस्थितिकीय परिणाम थे। वर्ष 1910 में ही गांधी जी ने आधुनिक प्रौद्योगिकी के परिणामस्वरूप पर्यावरण पर संकट उत्पन्न होने की भविष्यवाणी करते हुए कहा था, ''प्रकृति अपने नियमों के तहत निरंतर कार्य करती है लेकिन लोग नियमित रूप से उनका उल्लघंन करते हैं।''

गांधी जी का मानना था कि लोगों को यह समझना चाहिए कि पृथ्वी के संसाधनों को न केवल मानव समुदाय के लिए बल्कि अन्य जीवों के लिए और न केवल उन पीढ़ी के लिए बल्कि आने वाली पीढ़ी के लिए भी संरक्षित रखने की जरूरत है। प्रकृति के साथ तालमेल बिठाते हुए तथा संसाधनों का अनावश्यक इस्तेमाल से बचाते हुए यह कदम उठाना होगा।

गांधी जी का मानना था कि पर्यावरण के क्षेत्र में व्यापक सुधार की आवश्यकता है। इसमें मौजूदा वन क्षेत्रों का संरक्षण और उन्हें पुनर्जीवन प्रदान करना, खाली स्थानों का वनीकरण, भू–सरंक्षण के उपाय, स्वच्छ एवं प्रदूषक निरोधक उपाय, ऊर्जा संरक्षण आदि शामिल हैं। हमें एक ऐसी प्रणाली की आवश्यकता है जिसमें औद्योगिक कामगार साफ–सुथरे माहौल की मांग कर सकें, मलिन बस्तियों में रहने वाले लोग अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए शहरी योजनाओं को आधार बना सकें; विशेष रूप से महिलाएं पर्यावरण सम्बंधी समस्याओं के निदान में अपना सहयोग दे सकें।

संक्षेप में, अपने सम्पूर्ण जीवन में गांधी जी पर्यावरण और विकास के लिए अनुपम सबक मानवता के लिए छोड़ देते हैं, जो इस प्रकार है–

1. मानव जाति को प्रकृति के अंग के रूप में कार्य करना चाहिए न कि प्रकृति से अलग में कार्य करेगा।
2. पृथ्वी पर उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग मानव जरूरतों के लिए करेगा न कि अपनी लालसा की पूर्ति के लिए।
3. मनुष्य अहिंसा का प्रयोग न केवल साथी मनुष्यों के प्रति बल्कि अन्य रहने वाले जीवन और निर्जीव के प्रति भी करेगा क्योंकि संसाधनों का अति उपयोग भी हिंसा के बराबर है।
4. अधिनायकवादी शीर्ष से नीचे की जगह नीचे से ऊपर की साझा दृष्टिकोण।
5. असंपोषित उपभोक्तावादी आत्मविनाशकारी दृष्टिकोण के स्थान पर संरक्षणवादी और टिकाऊ जीवन रक्षक दृष्टिकोण।
6. मनुष्य का मानव के साथ साझा और समाज में गरीब और बेसहारों के लिए देखभाल एक नैतिक दायित्व के रूप में।
7. मानव जाति यह जरूर सोचे की एक साधारण गरिमामय जीवन के लिए कितनी वस्तुएं पर्याप्त है।
8. सभी वस्तुएं सामान्यतः स्थानीय आत्मनिर्भरता समता और सामाजिक न्याय के विकास को बढ़ाती है।
9. नैतिकता और संसाधन प्रयोग में आत्म अनुशासन विकास की सर्वोत्तम कसौटी है।

वर्तमान पर्यावरण संकट, लालच, शोषण और वर्चस्व की गलतियों के परिणाम हैं। इसलिए वर्तमान जरूरत की मांग है कि प्रकृति की बुनियादी ज्ञान और प्रकृति के नियमों का पालन है। जीवन का प्रबंधन प्रकृति के मूल्यों के अनुरूप करना होगा। अतः

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 42-44, ISSN 2348 – 3318

वर्तमान विकास संकट गांधीवादी रास्ते पर एक अलग दुनिया की परिकल्पना का मार्ग प्रशस्त करता है जिसमें वर्तमान विकास संकट गांधीवादी रास्ते पर एक अलग दुनिया का मार्ग प्रशस्त करता है। जिसमें वर्तमान जीवन शैली में परिवर्तन और उपभोक्तावाद में कमी से है। संदेश सरल और बहुत स्पष्ट ही है। लोगों के पास विकल्प नहीं है। एक सुरक्षित भविष्य और टिकाऊ संपोषित पर्यावरण की रक्षा हेतु गांधी जी के मार्ग पर चलना ही होगा। साथ ही जो आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के ज्ञान हैं उसे भी समुचित ढंग से प्रयोग में लाना होगा। आर्थिक दृष्टिकोण–विकास और आर्थिक उन्नति पर मानव मूल्यों के साथ सामंजस्यपूर्ण होना चाहिए। हमारा उद्देश्य जीने लायक जगह तथा जीने योग्य जीवन हमारे जीवन शैली के बदलाव के माध्यम से प्राप्त किए जा सकते हैं। हमारी असीमित जरूरत और असीमित लालच को नियंत्रित किया जाना चाहिए।

गांधी जी का समूचा जीवन और कार्य पर्यावरणीय संरक्षण का उदाहरण है। ऐसा इसीलिए नहीं है कि उन्होंने पर्यावरण पर अपने विचारों को कलमबंद किया, बांध का कार्य रोकने के लिए आंदोलन का नेतृत्व किया या नदी की सफाई की बल्कि सही मायने में वे सतत् विकास के प्रणेता थे। संक्षेप में, हम कह सकते है कि उनका पूरा जीवन एक संदेश था। उनका जीवन भारतीयों के विकास का मार्गदर्शक था और शेष दुनिया के लिए अनुयायी पथ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिन्हा, मनोज, ''गांधी अध्ययन'', ओरियंट ब्लैकस्वान, दिल्ली, 2010
2. मिश्र, अनिल दत्त, ''गांधी एक अध्ययन, पियर्सन, नई दिल्ली, 2012
3. मीना, महीप कुमार एवं खोड़ा, मुकेश कुमार, ''गांधी वादी चिंतन में पर्यावरण संरक्षण'' द्वारा उद्धत धर्मवीर चंदेल और लोकेश कुमार चंदेल, ''गांधी दर्शन के विविध आयाम'', आविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर, 2019
4. अहमद, सलीम, ''21वीं सदी में महात्मा गांधी की प्रासंगिकता'', द्वारा उद्धत किशोर बाबू (संपा.) ''भारतीय राजनीतिक विचार–गांधी, बोस और डॉ0 अम्बेडकर'', वर्ल्ड फोकस, नई दिल्ली, जुलाई 2017
5. गांधी, महात्मा, ''मेरे सपनों का भारत'', नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1960
6. गांधी, महात्मा, ''ग्राम स्वराज्य'', नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1963